(14)

1. उतरी पर्वतीय प्रदेश

उतरी पर्वतीय प्रदेश को सिंधु एवं ब्रह्मपुत्र नदियों ने कई भागों में विभाजित कर दिया है, इसके अलावा सतलज, काली एवं तीस्ता नदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

वस्तुत: ब्रह्मपुत्र नदी उतर पर्वतीय प्रदेश को पूर्वांचल की पहाड़ियों से अलग करता है।

- भारत के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल के 5 लाख km भौगोलिक क्षेत्रफल पर उतरी पर्वतीय प्रदेश का विस्तार है।
- इस प्रदेश का निर्माण टेथिस सागर में ~~बलान के~~ जमा हुए मलबों के फलस्वरूप जमा हुआ है।
- उतरी पर्वतीय प्रदेश को निम्न भागों में विभाजित किया गया है—

i) ट्रांस हिमालय
ii) हिमालय
iii)

i) ट्रांस हिमालय —

ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय पर्वत श्रृंखला के निर्माण से पूर्व का है। ट्रांस हिमालय की लम्बाई 1000 km एवं ऊँचाई 6000 m. है।

- ट्रांस हिमालय के अंतर्गत 3 श्रृंखलाएँ मौजूद है —

(A.) काराकोरम

(B.) लद्दाख

(C.) जास्कर

- इनके अलावे चीन के तिएनसान तथा कुनलुनशान जबकि पाकिस्तान के हिंदूकुश पर्वत, ट्रांस हिमालय के ही भाग हैं।
- उल्लेखनीय है कि सभी श्रृंखलाएँ कश्मीर के उत्तरी भाग में एक गाठ का निर्माण करती हैं जिसे पामीर का पठार / गाठ कहते हैं। इसकी औसत ऊँचाई 4500m से अधिक है।

(A.) काराकोरम —

- यह सिंधु नदी के उत्तर में भारत व चीन के सीमा पर स्थित है।
- पामीर की पठार से निकलकर उत्तर पश्चिम से दक्षिण पूर्व की ओर ~~विस्तृत~~ विस्तृत है।
- काराकोरम का अन्य नाम कृष्णगीरी है। इसकी औसत ऊँचाई
- इसकी सबसे ऊँची चोटी गाडविन ऑस्टीन है जो विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है। (8611m)

(16)

- चौड़ाई 80 km है।
- यहाँ की प्रमुख हिमानी बाटूरा, बाल्टोरा, बियाफो, सियाचिन etc. है।
- यह विशुद्ध रूप में शीत मरुस्थलीय प्रदेश है।

ii) लद्दाख —

- काराकोरम एवं जास्कर श्रेणी के मध्य स्थित है (ऊँ-5300m)
  हिमानी अपरदन के कारण यह पठार के रूप में तब्दील हो चुका है। इसका द०-पू० भाग चीन में कैलाश पर्वत के नाम से जाना जाता है।
- लद्दाख श्रेणी पर विश्वप्रसिद्ध भूतापीय ऊर्जा केन्द्र "Puga's valley" अवस्थित है।
- सिंधु नदी लद्दाख श्रेणी को काटती है। इसके फलस्वरूप गिलगिट दर्रा बना है।
- सिंधु नदी जास्कर एवं लद्दाख श्रेणी के बीच से होकर प्रवाहित होती हैं।
- लद्दाख श्रेणी से होकर सिंधु की श्योक नदी प्रवाहित होती है।
- लद्दाख श्रेणी के उत्तर पूर्व में सोडा का मैदान तथा देपसांग का मैदान अवस्थित है।

iii) जास्कर श्रेणी —

- यह लद्दाख श्रेणी के समांतर फैला हुआ है, यह पर्वत 76° देशांतर के पास महान हिमालय से अलग होती है।
- जास्कर पर ही बड़ालाचला एवं

(28)

हिमालय की उत्पत्ति — भूसंनति - टेथिस सागर
व
उत्तर भारत की नदियों की उत्पत्ति —
व
हिमानी संदेश को लेकर

- → उत्तर भारत की नदियाँ
- → अंतर
- → दक्षिण भारत की नदियाँ

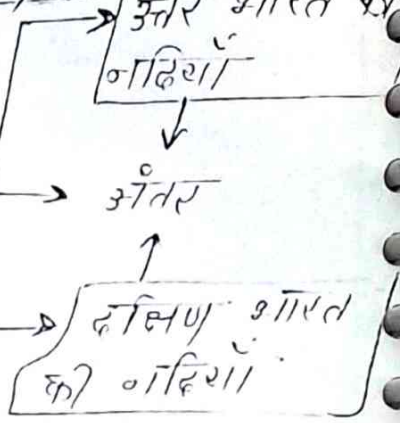

महाकल्प

भूगर्भिक समय सारणी

अवधि (करोड़ वर्ष)

चतुर्थ महाकल्प →
- → होलोसीन (11 हजार वर्ष से अब तक)
- → प्लिस्टोसीन (20 लाख से 10 हजार वर्ष)

तृतीय महाकल्प (अल्पाइन पर्वत निर्माणकारी बल) →
- → प्लायोसीन (0.51 - 0.20)
- → मायोसीन (2.5 - 0.5)
- → ओलीगोसीन (3.8 - 2.5)
- → इओसीन (6.5 - 3.8)

द्वितीय महाकल्प → कोई पर्वतीय घटना नहीं

प्रथम महाकल्प →
- → कैलिडोनियन
- → हर्सिनियन

प्री-कैम्ब्रियन ← पूर्व

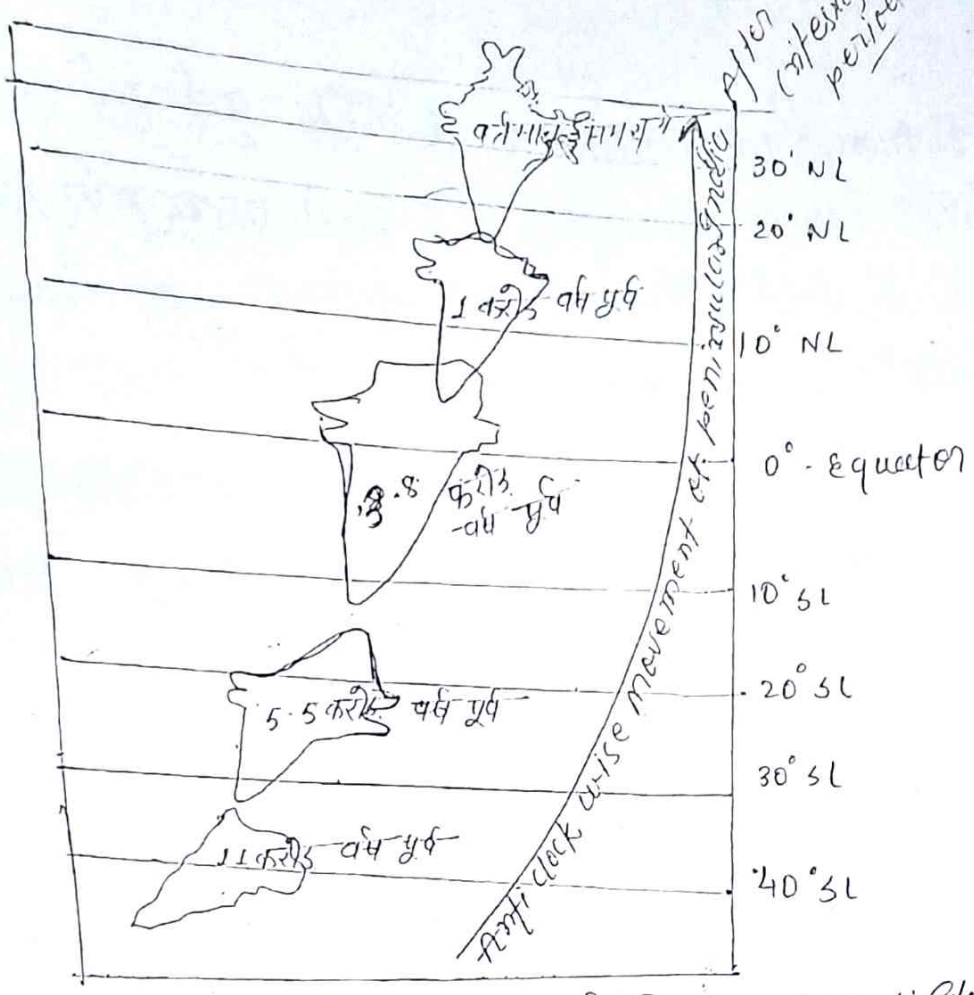

Fig :- भारतीय प्लेट का वामावर्त विस्थापन (Anti Clock wise movement)

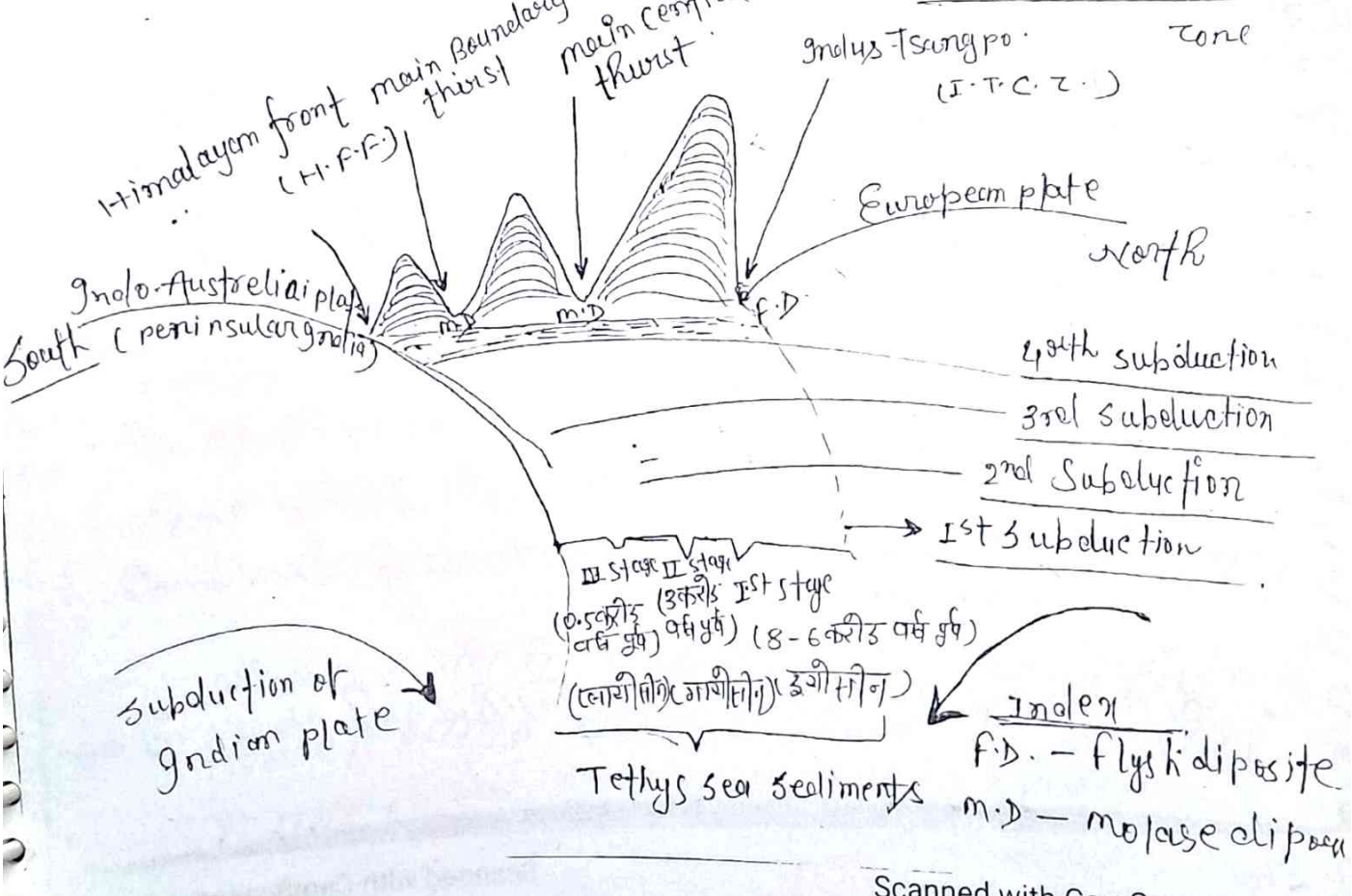

Scanned with CamScanner